E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(1): 234-236
Received: 26-10-2019
Accepted: 03-12-2019

पुनीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
पुनीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

असगर वजाहत के उपन्यासः किसान विषयक समस्याओं का समीक्षात्मक अध्ययन

पुनीता कुमारी

सारांशः
समकालीन उपन्यासकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनानेवाले मार्क्सवादी समर्थक असगर वजाहत ने अपने औपन्यासिक कथ्य के माध्यम से भारतीय सामाजिक जीवन को उसकी पूरी जटिलता के साथ उद्घाटित किया है। असगर वजाहत ने अपने उपन्यासों में स्वतंत्रता पूर्व से लेकर स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद अर्थात् वर्त्तमान में किसान जीवन की समस्याओं को अपने उपन्यास में पूर्णरूपेण परिलक्षित किया है। पूँजीवादी विकास के बढ़ते प्रभाव के साथ किसान जीवन के लिए बढ़ती समस्याएँ राष्ट्रीय स्तर पर है। विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत किसान को कितनी हानि सहनी पड़ती है तथा इन योजनाओं के पीछे योजनाकारों की छुपी स्वार्थ–लोलुपता का पर्दाफाश किया गया है। इन योजनाओं के अंतर्गत सहकारी फार्म, सीलिंग योजना, ऋण से संबंधित कुछ योजनाएँ इत्यादि, किसानों को खाद, उर्वरक, कीटनाशक इत्यादि के लिए दी जाती है। भारत के छोटे–बड़े कितने प्रतिशत किसानों को इन योजनाओं का लाभ मिलता है? इन योजनाओं ने किसान का शारीरिक और मानसिक शोषण किस प्रकार किया है? इतनी सारी सुविधाएँ मिलने के बाद भी राष्ट्रीय स्तर पर किसान आत्महत्या क्यों कर रहे हैं? पेटेन्टीकरण की प्रणाली ने किसानी जीवन में किस प्रकार हस्तक्षेप किया है? बिजली की सुविधा लेने के बाद किसान बिजली बिल चुकाने में क्यों असमर्थ हैं? संपूर्ण भारत के लिए जो अन्न उपजाते हैं, उनकी स्वयं की जिंदगी इतनी गरीबी और फटेहाली में क्यों कट रही है? भूमिहीन किसान की स्थिति अधिकतर आत्महत्या वाली ही क्यों होती है? इन सारी समस्याओं का उल्लेख वजाहत जी ने अपने उपन्यास में विस्तारपूर्वक किया है। इन सारी समस्याओं के पीछे जो सर्वप्रमुख समस्या है, वह पूँजी की समस्या है। पूँजीपतियों ने अपने पूँजी (अर्थ) के बल पर किसान का जमकर शोषण किया है और निरंतर करता जा रहा है। अतः सरकार उचित समर्थन मूल्य तथा आर्थिक सहयोग के द्वारा स्थिति परिवर्तित कर सकती है।

प्रस्तावनाः
हिंदी साहित्य–जगत् के सर्वाधिक वरिष्ठ रचनाकारों में असगर वजाहत का प्रमुख स्थान है। उन्होंने भारतीय समाज की यथार्थवादी जीवन–दृष्टि को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। अपने उपन्यास के माध्यम से भारतीय समाज के यथार्थ और दुर्बल पक्ष को दिखाने का कार्य किया है। भारतीय समाज का सर्वाधिक दुर्बल पक्ष है– मानव द्वारा मानव का शोषण और इस शोषण से उपजी समस्याएँ। जिस प्रकार हर बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है ठीक उसी प्रकार हर उच्चवर्ग के लोग स्वयं से निम्नवर्गीय लोगों का शोषण करते हैं।
समकालीनता के दौर में दो वर्गों में बँटे भारतीय समाज की यथार्थवादी जटिलताएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। भारतीय समाज की इन जटिलताओं को असगर वजाहत ने अपने उपन्यास में दिखाया है। पूँजीवादी सभ्यता ने भारतीय सामाजिक जीवन को छिन्न–भिन्न कर दिया है, क्योंकि समकालीन उपन्यास में सभी क्रियाकलाप और संबंध पूँजी पर टिके दिखाई दे रहे हैं। इसी पूँजीवादी विकास के भयानक रूप को अपने उपन्यास में वजाहत जी ने रेखांकित किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में समकालीनता की विभिन्न यथार्थवादी जटिलताओं को दिखाते हुए सामंती युग का ध्वस्त हो जाना, जमींदारी उन्मूलन का लागू होना तथा सामंतवाद का पूँजीवाद में परिवर्तित होने के फलस्वरूप विभिन्न वर्गों पर शोषण के प्रभाव को दिखाया है।
पूँजीवादी विकास से सर्वाधिक किसान जीवन के लिए समस्याएँ खड़ी हुई हैं। किसान जीवन से संबंधित समस्याओं को सर्वप्रथम प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास में दिखाया था, तत्पश्चात् समकालीन लेखक असगर वजाहत ने किसान जीवन की समस्याओं से भारतवासी को अवगत कराया है। किसानों का शोषण तो आजादी से पहले भी हो रहा था, जब भारत पर ब्रिटिश शासक शासन करते थे। ब्रिटिश शासक ने भारत के विभिन्न भागों में लगान वसूली, स्थायी बंदोबस्त, रैय्यतवाड़ी प्रथा, महालवारी प्रथा इत्यादि के माध्यम से किसान पर शोषण किया था। इन प्रथाओं के अंतर्गत जमींदार को कुल कर का 90 प्रतिशत अंग्रेजों को देना पड़ता था। किसान के शोषण और उत्पीड़न को औपन्यासिक कथ्य में वजाहत जी ने दिखाया है। कथ्य में यह भी दिखाया गया है कि लगानबंदी आंदोलन के समय किसान को बेदखल करके तथा उन पर तरह–तरह के झूठे मुकदमें चलाकर

परेशान करने के पश्चात उसे गाँव छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया जाता था। इन सारी समस्याओं का समावेश इनके उपन्यासों में है।

असगर वजाहत ने अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत किसान की दुर्गति का उल्लेख 'सात–आसमान' तथा 'उपन्यास–त्रयी' में पूर्ण रूप से किया है। 'सात–आसमान' के उत्तरार्द्ध में पूँजीवादी विकास का पूर्ण प्रभाव देखा गया है। जमींदारी उन्मूलन के बाद पूँजीवादी विकास के आगमन से जमींदारों के जीवन को छिन्न–भिन्न होते हुए दिखाया गया है। तत्पश्चात सीलिंग कानून, को–ऑपरेटिव फार्म तथा सरकारी स्कीमों के तहत किसानों को अनुदान मिलने की खबर का आगमन होता है। कथवाचक के अब्बा को सीलिंग कानून क्या है? को–ऑपरेटिव फार्म क्या है? कैसे बनते हैं? इत्यादि सवालों का जवाब मुंशीजी के माध्यम से मिलता है– ''मुंशीजी ने न सिर्फ को–ऑपरेटिव फार्म के बारे में बताया बल्कि बहुत सारी ऐसी सरकारी स्कीमों के बारे में बताया जिसमें अनुदान मिलता था। यानी जो पैसा कर्ज लिया जायेगा वह वापस करने की जरूरत नहीं है।'' [1]

आगे मुंशीजी कथावाचक के अब्बा को बताते हैं– ''ये अनुदान सदा न चलेंगे। सहकारी खेती में भी सरकार जो मदद दे रही है आज है कल न रहेगी।'' [2]

मुंशीजी ने इस अवसर का लाभ लेने के लिए अब्बा को विस्तारपूर्वक समझाना शुरू किया। मुंशीजी से जानकारी मिलने के बाद अब्बा को यह उम्मीद मिलती है कि वह जमीन भी बचा सकता है और खेती के लिए आसान किस्तों पर पैसा भी मिल सकता है, जिसमें छूट भी होगी। मुंशीजी आगे अब्बा को बताते हैं– ''आपकी जमीन में कोई छिछला–सा तालाब हो तो तालाब खुदवाने के लिए पाँच हजार का अनुदान मिलता है। उसके बाद उसी तालाब में मछली पालन के लिए पाँच हजार और अनुदान मिलता है। क्या बुरा है, हजार–पाँच सौ मछली के बच्चे डलवा दीजिए। ये तो अंधी खेती है, अंधी। ब्लाकवालों के पास इतनी रकम आ गयी है कि उनकी समझ में नहीं आता कि इतने कर्ज लेनेवाले कहाँ मिलेंगे? यह अवसर है।'' [3]

विकास के नाम पर किसानों को गुमराह करके अपना उल्लू सीधा करनेवाले योजनाकारों को मुंशीजी के माध्यम से दिखाया गया है– ''मुंशीजी 'यही अवसर है' खूब बोलते थे और खुद उन्होंने अवसर का पूरा लाभ उठाया था। तालाब खोदने, मछली पालने, रेशम के कीड़े पालने, बकरियाँ पालने, ऊसर जमीन को उपजाऊ बनाने, कुआँ खुदवाने, चेन पम्प लगाने, नाला निकलवाने, कट्टी काटने की मशीन खरीदने, शौचालय बनवाने, धुआँरहित चूल्हा खरीदने; गरज ये कि जितने कामों के लिए अनुदान मिल सकता था, उन्होंने लिया था।'' [4]

उपर्युक्त उद्धरण से यही स्पष्ट होता है कि जो अनुदान या योजनाएँ किसानों को मिलनी चाहिए, उसका लाभ मुंशीजी जैसे लोग उठाते हैं और यहाँ भी किसानों को अपने अधिकारों से वंचित रखा जाता है। अपनी अशिक्षा और अज्ञानता के कारण इनका शोषण प्रत्येक स्तर पर हो रहा है।

''वर्तमान में लगभग 25 प्रतिशत किसान ऐसे हैं, जिनके पास दोनों समय खाने के लिए भरपेट अच्छा भोजन नहीं, शरीर ढकने के लिए स्वच्छ और मजबूत कपड़े नहीं। उनकी गृह–लक्ष्मियाँ फटी हुई धोतियों में अपनी लज्जा को छिपाये जीवन यापन करती है।'' [5]

भारतीय किसान अधिकांशतः अभी भी सुसम्पन्न नहीं हैं। अन्य देशों के किसान भारतीय किसानों की तुलना में सम्पन्न हैं, क्योंकि खेती करने तथा जीवन को सुखमय बनाने के लिए उन्हें साधन उपलब्ध हैं। लेकिन अधिकांश भारतीय किसान अभी भी हल–बैल के सहारे खेती करते हैं। सिंचाई के लिए ये बारिश पर निर्भर होते हैं। भारतीय किसान जीवन के लिए निरक्षरता अभिशाप है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा था– 'शिक्षा की यदि कमी न होती, तो ये गाँव स्वर्ग बन जाते।' अशिक्षा का प्रभाव शहरों से अधिक गाँवों में दिखाई पड़ता है। औपन्यासिक कथ्य में मुंशीजी और इंस्पेक्टर द्वारा सहाकारी फार्म को चलानेवाले सदस्यों के माध्यम से दिखाया गया है– ''फार्म का नाम उस गाँव के नाम पर रखा गया था जो धनही से नजदीक था। हसनपुर सहकारी खेती फार्म लि.। जाहिर है कि अब्बा अध्यक्ष थे। एक महामंत्री भी थे, कई मंत्री थे, एक कोषाध्यक्ष थे। लेकिन उनमें से कोई भी अँगूठा लगाने के अलावा कुछ न जानता था।'' [6]

भारत में सहकारी इंस्पेक्टर एक रिपोर्ट लिखने के नाम पर किसान को किस प्रकार लूटता है.– यह उपन्यास में सहकारी इंस्पेक्टर के माध्यम से उद्धृत है– ''इंस्पेक्टर ने रिपोर्ट लिखने के पाँच सौ माँगे। दो सौ मनीजर को दिये गये और पचास रुपये मैकू को मिले। थोड़ा बेहतर तार जो सामने की तरफ लगा था, वह रिपोर्ट लिखी जाने के बाद मनीजर उखाड़ ले गये और अपनी बगिया के चारों तरफ लगा दिया।'' [7]

असगर वजाहत ने अपने औपन्यासिक कथ्य के माध्यम से भारतीय किसान की दयनीय स्थिति को रेखांकित किया है, क्योंकि सहकारी बैंक से कर्ज लेने के बाद भी किसान की स्थिति में कोई सुधार होना तो दूर की बात, इसके विपरीत किसान को हानि ही होती है।

स्वाधीनता के बाद किसानों की स्थिति को अब्बा के माध्यम से देखा जा सकता है, जो हर बार घाटा सहने के बाद भी काम करवाते हैं। किसान की दर्दनाक दास्तां आजादी से पूर्व तो थी ही, आजादी के बाद भी किसान की स्थिति सुधरी नहीं है। यह कथावाचक के अब्बा की स्थिति को देखकर स्पष्ट होता है– ''अब्बा फार्म से पैसा कमाने और खेती जमानेवाले काम में लगे हुए थे। चेन पम्प लगाकर सिंचाई करनेवाली योजना फेल हो चुकी थी। फार्म पर या उन पर करीब 40 हजार का कर्ज हो गया था। लेकिन आमदनी वही थी।'' [8] इसी प्रकार इंस्पेक्टर, मनीजर तथा मैकू द्वारा कथावाचक के अब्बा को ग्रामीण बैंक से लोन, गेहूँ की अच्छी पैदावार या ट्यूबवेल लगाकर मोटर की सहायता से खेती करने जैसी जिन अनेक योजनाओं का सुझाव दिया जाता था, उन योजनाओं के नतीजे में कर्ज में डूबने की स्थिति का उल्लेख है।

जिस प्रकार उपन्यास में कथावाचक के अब्बा को यह लगता है कि खेती में बड़ा मुनाफा है और गेहूँ की उन्नत किस्म के बीज से पैदावार अच्छी होती है, वर्तमान में भारतीय किसान की यही गलतफहमी उसकी मानसिक और शारीरिक पीड़ा की वजह है। किसान को सहकारी योजना का लाभ जिस प्रकार मिलता है, वह अब्बा के माध्यम से दिखाया गया है।

''फार्म के इंतिजाम को अच्छा बनाने के लिए अब्बा ने जो कुछ किया था उसके नतीजे में कर्जे चढ़ गये थे। हर साल जून के महीने में करीब चार–पाँच हजार की किस्त देनी पड़ती थी।'' [9]

वास्तव में भारतीय किसान की यही स्थिति है। अब फार्म तक बिजली की लाइन लाने के लिए काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। किसान का शोषण बिजली विभाग में जिस तरह होता है, वह अब्बा के माध्यम से उद्धृत है– ''बिजली विभागवालों ने पूरा 'इस्टीमेट' बनाया। जो लाइन ले जाने में लट्ठे लगने थे उसका आधा खर्च आठ हजार रुपये आता था, ये खर्च अब्बा को देना था। इस पर अब्बा तैयार हो गये। लेकिन फिर भी बिजली विभागवाले कोई कार्रवाई न कर रहे थे। आखिर उन्होंने खुलकर कहा कि सबको मिलाकर चार हजार पड़ेगा यानी असिस्टेंट इंजीनियर से लेकर इंस्पेक्टर और लाइनमैन तक का हिसाब इसमें हो जायेगा। अब्बा ने चार हजार दे दिये। तब काम आगे बढ़ा लेकिन फिर भी उस कार्रवाई में पूरे दो साल लग गये।'' [10]

बिजली विभाग में काम करनेवाले इंस्पेक्टर या विभाग का कोई सदस्य किसान से किस काम के पैसे लेते हैं? क्या सरकार इन्हें सिर्फ नियुक्त करती है, वेतन नहीं देती है, क्या?

वजाहत जी ने अपने उपन्यास में इस बात का स्पष्टीकरण किया है कि कई साल की कोशिशों के बाद फार्म पर बिजली आने के बाद भी किसान की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर होती है कि वे बिजली के बिल चुकाने में भी असमर्थ होते हैं। भारतीय किसान का प्रत्यक्ष उदाहरण उपन्यास के अब्बा हैं– ''खेती की हालत तो न सुधरी लेकिन बिजली के बड़े–बड़े बिल आने शुरू हो गये। जो कर्ज लिया गया था उसकी किस्तें तो चुकानी ही पड़ती थीं। अब्बा की परेशानियाँ बढ़ गयीं। उनको हर साल जेब से सात–आठ हजार देने पड़ जाते थे और आमदनी वही थी यानी डेढ़–दो सौ मन धान, अब ये होता था कि बाजार की आमदनी बाग की आमदनी या मकानों–दुकानों के किराये से जो पैसा बचता था वह कर्ज की किस्तों और बिजली के बिलों में चला जाता था।'' [11]

वर्त्तमान में भारतीय किसानों की ठीक यही स्थिति है, जो असगर वजाहत के उपन्यास में अब्बा की है। किसानों के साथ एक समस्या नहीं बल्कि कई समस्याएँ हैं। सहकारी फार्म के नाम पर किसान को मिलनेवाला असली लाभ उपन्यास में इस प्रकार उद्धृत है– ''सरकारी फार्म बना लेने के करीब दस साल बाद अब्बा को फिर सीलिंग की नोटिस मिली। उन्होंने जवाब दिया कि उनका सहकारी फार्म है और सीलिंग से मुक्त है। लेकिन सरकार की तरफ से उन पर मुकदमा कायम कर दिया गया। सरकारी पक्ष का कहना था कि सीलिंग से बचने के लिए सहकारी फार्म बनाया गया है। वह दरअसल सहकारी फार्म नहीं है।'' [12]

इस तरह के मुकदमें से किसान का मानसिक और शारीरिक शोषण होता है, जो अब्बा के माध्यम से वर्णित है– ''उनकी परेशानियाँ उस वक्त और बढ़ गयी जब 'लोअर कोर्ट' से सीलिंग का मुकदमा हार गये। अदालत ने ये माना कि सहकारी फार्म सीलिंग से बचने के लिए बनाया गया था।'' [13] इसके बाद भी कई प्रक्रिया पूरी करने के लिए किसान को परेशान किया जाता है।

पेटेन्टीकरण की प्रणाली ने किसान के जीवन को अत्यधिक हानि पहुँचाया है, क्योंकि पेटेन्टीकरण के माध्यम से पूँजीपतियों का किसानों पर एकाधिकार स्थापित हो जाता है। हाइब्रिड या उन्नत किस्म के बीज पर ये पूँजीपति अपना एकाधिकार समझते हैं। जिस प्रकार दवा कंपनी, दवा बनाती है और उसपर अपना एकाधिकार समझती है, उसी प्रकार किसानों पर पूँजीपतियों का एकाधिकार भी किसान जीवन की एक समस्या है। यह पेटेन्टीकरण किसान के जीवन में हस्तक्षेप करता है, जो वर्त्तमान में किसानों की बहुत बड़ी समस्या है।

असगर वजाहत ने अपने 'उपन्यास–त्रयी' में उपन्यास के नायक साजिद के अनुभव को आधार बनाकर किसानों की वर्त्तमान समस्याओं को दिखाया है। दिल्ली में पत्रकारिता से हारकर साजिद केसरियापुर आकर भी.एल.डब्ल्यु. से सलाह लेकर खेती करता है, जहाँ उसे अनुभव होता है कि किसानी काम घाटे और नुकसान का है। किसानी जीवन के लिए आर्थिक स्थिति का अभाव एक बहुत बड़ी समस्या है। योजनाकारों की तमाम सुविधाओं के बाद भी विकास गाँव से दूर हो रहे हैं।

'उपन्यास–त्रयी' के दूसरे खंड 'बरखा रचाई' में किसानों की बदहाली को दिखाया गया है। शहर में रहनेवालों के रहन–सहन चाहे वो एक दुकान ही क्यों न लगाता हो, गाँव के बड़े–से बड़े किसान की भी इतनी शानदार जिन्दगी नहीं होती है। किसानों के काम में शारीरिक मेहनत तो सबसे ज्यादा है ही, हानि भी किसान को ही सहनी पड़ती है। किसान को खेती के लिए पानी की जरूरत न हो और बारिश हो जाए, तो कितनी बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है। इसका वर्णन साजिद के माध्यम से उपन्यासकार ने किया है– ''इस बारिश से गाँव के सब ही लोग दुःखी थे। सोचते थे कि पानी बरसने के बाद कीड़ा लगने की संभावना बढ़ जाती है। मुझे यह ख्याल आया कि यार मैं तो पहली बार इस तनाव को झेल रहा हूँ लेकिन ये लोग तो जीवन भर झेलते हैं। पीढ़ी–दर–पीढ़ी झेलते हैं और अगर मिलता भी है तो क्या?''

साजिद खेती की जटिलता पर बहुत सोचता है। उसे यह महसूस होता है कि किसान को कृषि छोड़कर यदि कोई दूसरा काम मिलेगा तो अधिकांश किसान कृषि को छोड़ना ही पसंद करेंगे। संपूर्ण भारत में यह एक गंभीर समस्या है। किसानों के लिए बाढ़ और सूखे की समस्या कम थी क्या? जो सरकार ने नयी–नयी योजनाओं के तहत कर्ज देकर किसानों को आत्महत्या करने के अलावा कोई विकल्प नहीं दिया। ये विकास की योजनाएँ केवल 2 प्रतिशत लोगों के लिए थी।

किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या के संबंध में 'बरखा रचाई' में साजिद कहता है– ''किसानों के बड़े–बड़े संगठन लापता हो गये। पत्रकारों के संघ छिन्न–भिन्न हो गये..... और सब खामोश हैं। अखबार किसानों की आत्महत्याओं को चौथे–पाँचवें पेज पर डाल देते हैं..... संवेदन–हीनता सरकार, प्रशासन, संस्थाओं पर ही नहीं पूरे समाज पर अधिकार जमा चुकी है।'' [14]

'उपन्यास–त्रयी' का नायक तमाम कोशिशों के बावजूद वह बदलाव नहीं ला पा रहा है, जो उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा सपना था। वह पत्रकारिता का पेशा अपनाकर गरीबों, किसानों तथा पिछड़े हुए लोगों के जीवन में बदलाव लाना चाहता है, लेकिन उसे लगता है यह अखबार उन उद्योगपतियों के लिए है, जो अपने हितों के लिए अखबार निकालते हैं, अखबार, टी.वी. चैनल उनके लिए हैं जो इसे फलने–फूलने में मदद करता है। इसके पीछे सिर्फ एक ही चीज है– पूंजी। साजिद आगे कहता है– ''पूंजी की सत्ता.... ऐसे समाज का निर्माण कर रही है जो उसके साथ चले, उसे समर्थन दे, उसके शोषण में शामिल हो, उसका शोषण कर सके..... बिल्कुल निर्मम और अमानवीय तरीके से।'' [15]

निष्कर्ष

असगर वजाहत के औपन्यासिक कथ्य से यह स्पष्ट होता है कि संपूर्ण भारत में किसानों की आत्महत्या का कारण है– पूँजीवादी विकास। आजादी से पहले हो या आजादी के बाद हमारे देश के किसान किसी–न–किसी रूप में शोषित हो रहे हैं। सदियों से चली आ रही कृषक की दशा आज भी ज्यों का त्यों है, क्योंकि किसानों की समस्या की समाधान वर्त्तमान में भी नहीं हो रहा है। यह पीड़ा कृषक वर्ग पीढ़ी–दर–पीढ़ी भोगते आ रहे हैं।

संदर्भ–संकेतः

1. सात आसमान, असगर वजाहत, पृ०– 172
2. वही, पृ०– 173
3. वही, पृ०– 173
4. वही, पृ०– 173
5. राजहंस हिन्दी निबंध, डॉ० आर० एन० गौड़, पृ०– 381
6. सात आसमान, असगर वजाहत, पृ०– 176
7. वही, पृ०– 182
8. वही, पृ०– 190
9. वही, पृ०– 192
10. वही, पृ०– 193
11. वही, पृ०– 198
12. वही, पृ०– 197
13. बरखा रचाई, असगर वजाहत, पृ०– 26
14. वही, पृ०– 163
15. वही, पृ०– 168